International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197; Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 870-871

संत नितानंद जी के काव्य में सामाजिक सरोकार

डॉ० बबीता तंवर
विस्तार व्याख्याता, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, महम, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

''नितानंद खोटा वचन, मुख से कदे न बोल।
जेा कोई बोलै आपको, तो मन राख अडोल।।''[1]

कहने की आवश्यकता नहीं है कि मध्यकालीन युग–परिवेश में सामाजिक जीवन का स्तर श्रेष्ठ नहीं था। उसमें अनेक विकार आ चुके थे। तत्कालीन युग में हिन्दू और मुस्लिमों का पारस्परिक वैमनस्य भी किसी से छिपा नहीं था। वे दोनों एक–दूसरे के धर्म को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए सदैव प्रयत्नरत रहते थे। इसी कारण दोनों संघर्षरत रहते थे। उधर समाज पर भी अनेक विषय–विकार हावी–प्रभावी हो रहे थे। जिसके फलस्वरूप सामाजिक ढांचा अस्त– व्यस्त हो गया था। संत नितानंद जी ने ऐसे विकट परिवेश में सामाजिक स्तर को उन्नत करने के लिए लोगों का मार्गदर्शन किया। इन्होंने दुर्व्यसनों में फँसे लोगों को सही राह पर आने का संदेश दिया ताकि सामाजिक ताना–बाना सुरक्षित रह सके। साथ ही विकट परिस्थितियों में भी धैर्य बनाये रखने को कहा तथा कटु वचन न बोलने का आग्रह कर सामाजिक –सौहार्द को बनाये रखने का संदेश देते हुए सोच–विचार कर चलने की सलाह भी दी –

''नितानन्द चित चेतकर, चलो विचार विचार।
बुरी भली खोटी खरी, कोई कहो गंवार।।''[2]

इस प्रकार संत नितानंद की वाणी में सामाजिक परिवर्तन करने की अदम्य लालसा दिखाई देती है जो उस युग की महत्ती आवश्यकता थी। इनकी वाणी में सामाजिक संवेदना और सरोकार साफ–स्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं। इस विविधतापूर्ण परिवेश में संत नितानंद ही नहीं अपितु ''कई संत सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने मनुष्यता को नैतिक पतन से बचाने के लिए भरसक प्रयास किया परन्तु संत सम्प्रदाय भी इस युग की विषैली हवा से बच न सके और उनमें भी फूट पड़ने लगी।''[3] परन्तु संत नितानंद ने किसी सम्प्रदाय विशेष का अनुकरण नहीं किया अपितु उन्हें जो कुछ भी समाज विरोधी लगा उसी को अपनी वाणी के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज सुधार का प्रयास किया।

संत नितानंद ने सामाजिक मान–मर्यादाओं और मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया। साथ ही परिवार का मूलाधार नारी एवं पुरूष को अपने–अपने दायित्वों का निर्वहन करने को कहा। इन्होंने पतिव्रता नारी को सुलक्षणी कहा है और पथ भ्रष्ट नारी की मुक्तकण्ठ से निन्दा की है। साथ ही पति कर्म और पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करने वाली नारी को श्रेष्ठ कहा है–

''जो कुछ पति आज्ञा करे, धरे आपने सीस।
सोई नार सुलक्खनी, मिले ताहि जगदीश।''[4]

कुपथगामी नारी की निन्दा करते हुए नितानन्द जी कहते हैं–

''पति की सेवा न करे, नितानंद जो आन।
लोग रिझावे कपट से, सो विभचारन जान।।''[5]

नितानंद जी कहते हैं कि नारी धन्य है जिसके मन में उसका स्वामी बसा है। जो पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करती है। शील और लज्जा आदि तथा नारी सुलभ–गुणों से सम्पन्न है। वे ऐसी नारी की प्रशंसा करते हैं तथा उसकी पहचान बताते हुए कहते है–

''चहूँ दीसी चितवे नहीं, राखें नैन निवाय।
शुद्ध भाव बानी विमल, पर घर धरे न पाय।।''[6]

नितानन्द के काव्य में पारिवारिक–सामाजिक मूल्यों एवं दायित्वों को सर्वोपरि माना है। इनकी वाणी परिवार को जोड़ने का कार्य करती है तथा समकालीन भौतिक परिवेश में धनार्जन की भागदौड़ के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं को निवारण करती है। इनकी वाणी जाति–पातिगत भेदभाव को दूर कर पारस्परिक सौहार्द भाव का संदेश देती है। इन भेदभावों और बाह्याडम्बरों का संत लोग ही निवारण करते हैं परन्तु कलिकाल में कतिपय तथाकथित संत इस मार्ग से विमुख हो गये हैं–

''नितानंद कलिकाल में, रही न संत पिछान।
लोभी लंपट मसखरा, तिनका आदर मान।।''[7]

नितानंद जी ऐसे संत और उनकी पूजा करने वालों को लताड़ते हैं तथा युग–सत्य की अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं–

''कलयुग आया नितानन्द, मुनिजन रहे अकुलाय।
डिम्भ कपट पाखण्ड को, सब जग पूजन जाय।।''[8]

नितानन्द जी ने कर्म को महत्त्व दिया है। उनकी दृष्टि जाति–पाति और वर्ण–व्यवस्था से ऊंची है। उन्होंने ब्राह्मण कुल में जन्म लेने वाले को श्रेष्ठ नहीं माना अपितु सद्कर्म करने वाले को उत्तम कहा है। ब्राह्मण को खरी–खोटी सुनाते हुए कहा है–

''ब्राह्मण भूले भरम में, धरा जनेऊ कान।
परब्रह्म को छोड़कर, सुमरै आन ही आन।।''[9]

नितानन्द ने कलियुग के ब्राह्मण को मिथ्यावादी और कर्म से विमुख बताया। वह समाज का पथ प्रशस्त करने वाला नहीं अपितु उसे मिथ्याचारों में फंसा कर स्वार्थ –सिद्धि में लगा है। संत नितानंद ऐसे लोगों से दूर रहने का उपदेश देते हैं–

''कलि के ब्राह्मण कुटिल हैं ताहि न न्योत जिमाय।
दूध पिलावै सर्प को, सो भी विष हो जाय।।''[10]

ऐसे अहंकारी और मिथ्याचारी, कपटी लोगों से नितानन्द जी सावधान रहने का संदेश देते हैं। सांसारिक मोह–माया में संलिप्त

ऐसे लोग न तो समाज–सुधार का संदेश दे सकते हैं और न ही परम तत्त्व को प्राप्त कर पाते हैं। नितानन्द जी कहते हैं–

''हाड़ चाम की देह में अकड़्या फिरै गंवार।
नितानन्द हरि क्यूं मिलै, धरया भार पर भार।।''[11]

ऐसे विकट परिवेश में संतों ने मानव धर्म और मानवता की स्थापना के लिए समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने का संदेश दिया ताकि मानवता का संस्थापना हो सके।
इसलिए उन्होंने मूर्तिपूजा करने वाले अंधविश्वासी लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहा है–

''चेतन साहेब छोड़कर, जड़ को पूजन जाय।
अंधों को दीखै नहीं, दर्पण लाख दिखाय।।''[12]

स्वामी जी कहते हैं कि मानव शरीर धारण करके हमें मानवता को महत्त्व देना चाहिए। मानवीय गुणों को समृद्ध कर जीवन को सुखी बनाना चाहिए। साथ ही मानवता की स्थापना के लिए सत्य, अहिंसा, त्याग, दया, परोपकार, संयम आदि मूलभूत तत्त्वों को अपनाना चाहिए। यथा–

''नितानन्द गुण लीजिये, जथा हंस पथ लेत।
दूध दूध को अंच कर, पानी चोंच न देत।।''[13]

मानव–मानव जीवन तभी कहलाता है जब वह उदात्त मानवीय गुणों को अपनाये। ऊँच नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर समानता का व्यवहार करें इसलिए कुल श्रेष्ठ का अहंकार त्याग कर कर्म को महत्त्व प्रदान करना चाहिए। तभी सामाजिक समानता और सौहार्द का भाव स्थापित हो सकता है। इसलिए संतों ने ''निम्न वर्ग में आत्मविश्वास की भावना भरकर एवं उच्च वर्ग के मस्तिष्क से उच्चता के विचार का निष्कासन करवा कर, भेदभाव की खाई को पाटना चाहते थे। भारतीय समाज में इनका यह प्रयत्न एक ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। जिस मार्ग को आज कानून ने अपनाया है। उनकी वाणी ने उसी युग में अपना लिया था।''14 इस प्रकार प्रायः सभी संत समाज सुधार के पक्षधर थे।
संतों ने तत्कालीन समाज में हिन्दू और मुस्लिम के पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने का भरसक प्रयास किया तथा दोनों सम्प्रदायों में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए उन पर कुठाराघात किया क्योंकि दोनों समुदाय अपनी–अपनी पद्धति से परम तत्त्व को प्राप्त करना चाहते थे। नितानन्द जी कहते हैं कि पाखण्डों और मिथ्याचारों के माध्यम से ईश्वर अल्लाह को प्राप्त करना संभव नहीं है। यथा–

''मियां स्वाद कै बस पड़्या, बहुत बिनासै जीव।
चढ़ मस्जिद साहेब कहै, कहाँ उन्हों को पीव।।''[15]

इन्होंने मुसलमानों के ही नहीं अपितु हिन्दुओं के कर्मकाण्डों और मिथ्याचारों का विरोध किया है। नितानन्द जी हिन्दू–मुसलमानों की पशुबलि का विरोध करते हुए कहते हैं कि ऐसे लोग परम तत्त्व परमात्मा को प्राप्त ही नहीं कर सकते–

''बकरी मुरगी मच्छियाँ, मार करी संग्राम।
नितानन्द उन जिवहुँ को, कहां बहिस्त मुकाम।।''[16]

इसी प्रकार मस्जिद पर चढ़कर अजाँ करने वालों का विरोध करते हुए कहा है–

''मियां पुकारै क्या चढ़ा साहेब बहरा नाहिं।
जिसे सुनावे बांग दे, सो तो तुझ ही माहि।''[17]

इस प्रकार बाहरी दिखावे से ईश्वर को प्राप्त करना सम्भव नहीं है। उसे तो सहज साधना के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। वे कहत हैं कि–

''सहजे सहजे सब गये, कर्म कामना काम।
मिली लहर दरियाव में, सब घट रमता राम।।''[18]

केवल यहीं नहीं संतों ने निन्दा का निषेध किया है और निन्दक को पापी कहा है। नितानन्द जी ने निन्दक को कामी, क्रोधी और लालची तक कहा है।''[19] लेकिन वे अवगुणों की ओर सद्भावपूर्वक ध्यान दिलवाने वाले निन्दक की प्रशंसा भी करते हैं–

''निदंक सा साऊ नहीं, इस दुनिया के बीच।
धर्म धर्म ना छुवै, पाप–पाप ले खींच।।
ज्यों निदंक निन्दा करै, त्यों त्यों ऊजल होय।
नितानन्द तन रोग की, ऐसी दवा न कोय।।''[20]

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि संत नितानन्द जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को खण्डन कर उनको दूर करने का भरसक प्रयास किया ताकि सामाजिक ताना–बाना सुरक्षित रह सके। साथ ही हिन्दू–मुस्लिम एकता की स्थापना कर पारस्पारिक सौहार्द भाव उत्पन्न किया। केवल यही नहीं जातिपातिगत भेदभाव का विरोध किया तथा मूर्तिपूजा और तीर्थव्रत जैसे बाह्याडम्बरों का खण्डन करके मानव धर्म एवं मानवता की संस्थापना की। निस्सन्देह नितानंद की वाणी केवल संत समाज के लिए ही नहीं अपितु समाज के प्रत्येक वर्ग में चेतना लाने का सार्थक प्रयास करती हुई सामाजिक सरोकारों का निवर्हन करती है।

संदर्भ

1. सम्पा. भोलानाथ प्रज्ञाचक्षु, सत्य सिद्धांत प्रकाश, (कुशब्द का अंग) पृ. 284
2. वही वही वही
3. डॉ. विनोद कुमार तनेजा, हिन्दी साहित्य का रीतिकाल, पृ. 9
4. सम्पा. भोलानाथ प्रज्ञाचक्षु, सत्य सिद्धांत प्रकाश,(पतिव्रता का अंग) पृ. 100
5. वही, वही, वही, पृ. 101
6. वही, वही, वही, पृ. 102
7. वही, वही, (चाणिक का अंग) पृ. 184
8. वही, वही, वही
9. वही, वही, वही, पृ. 188
10. वही, वही, वही
11. वही, वही, वही
12. वही (भरम विधूषण का अंग) पृ. 218
13. वही (सारग्राही का अंग) पृ. 261
14. डॉ. श्रीमती विमल महता, निर्गुण कवियों का सामाजिक आदर्श, पृ. 108
15. सत्य सिद्धांत प्रकाश (मांस आहार निषेध का अंग) पृ. 346
16. वही, वही, पृ. 345
17. वही, वही, वही
18. वही, (सहज का अंग) पृ. 210
19. वही (निन्दा निषेध का अंग) पृ. 357
20. वही, वही, वही, पृ. 358